टिप्पणी

© NCERT
not to be republished

शब्दकोश

अंतर्राष्ट्रीयवाद — कला की एक प्रवृत्ति जो खुले तौर पर यूरोप और संयुक्त राज्य अमरीका के कला आंदोलनों को स्वीकार करती है। स्वतंत्रता के पश्चात् भारतीय कलाकारों ने 1950 के दशक में आधुनिकता से प्रभावित होकर अपने व्यवहार में इसे अपनाया और विश्व के आधुनिक कलाकारों के साथ अपनी सहभागिता दर्ज की।

अकादमिक यथार्थवाद या अकादमिक कला — यूरोपीय अकादमियों या विश्वविद्यालयों के प्रभाव से उत्पन्न चित्रकला और मूर्तिकला की एक शैली है। भारत में यह औपनिवेशिक काल के दौरान आई, जब उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में कला अकादमियों की कलकत्ता (अब कोलकाता) मद्रास (अब चेन्नई) और लाहौर में स्थापना की गई थी।

अमूर्तन और अमूर्त कला — अमूर्त कलाकार रूपाकारों को बहुत सरलीकृत करता है या उन्हें अतिशय रूप में प्रस्तुत करता है जिनका प्रयोग आधुनिक काल में देखा जाता है, यद्यपि वे पहले भी अस्तित्व में थे।

अभिव्यंजनावाद — अभिव्यंजनावाद शब्द कला में तीव्र संवेग को अभिव्यंजित करने वाला शब्द है। अभिव्यंजनावाद एक कलात्मक शैली है, जिसमें कलाकार अपनी भौतिक यथार्थ की अपेक्षा संवेदना या मनोभावों को व्यक्त करता है। अभिव्यंजनावादी कलाकार यथार्थ को अतिरेक के द्वारा विरूपित करते हैं और अपने विचारों और मनोभावों को व्यक्त करने के लिए वे ओजपूर्ण स्पष्ट तूलिका आघात और तीव्र रंगों का प्रयोग करते हैं।

आधुनिकतावाद — एक ऐसी परिघटना है, जिसने मानव जीवन में परिवर्तन एवं सुधार किया। यह विश्वव्यापी प्रतिक्रिया है, जिसने मानव के जीवन में सभी पक्षों को प्रभावित किया है। उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक में अपने आगमन से आधुनिकतावाद ने मानव के सोचने के तरीके को निर्देशित किया है। आधुनिकतावाद की संकल्पना जो मुख्य रूप से एक दर्शन एवं व्यवहार के रूप में विकसित हुई और गैर यूरोपीय देशों— अमेरिका, अफ्रीका, आस्ट्रेलिया उपनिवेश के साथ वहाँ पर पहुँची।

© NCERT not to be republished

Chapter 9.indd 145 25 February 2022 05:25:13

आवां गार्द — 'आवां गार्द' एक फ्रांसीसी भाषा का शब्द है जिसका प्रयोग उन नवाचारी कलाओं, के लिए प्रयुक्त होता है जो वर्तमान में स्थापित सौंदर्यात्मक मूल्यों, प्रतिमानों एवं राजनीतिक सिद्धांतों को स्वीकार नहीं करती हैं। भारत में यह राजनैतिक कट्टरपंथी और उदार बुद्धिजीवियों से संबंध रखता है।

एचिंग — वुडकट के विपरीत एचिंग में उभरा हुआ भाग रिक्त रहता है जबकि गहरे भाग में स्याही भरी जाती है। शुद्ध एचिंग में ताँबा, जस्ता और स्टील की प्लेट मोम या एक्रिलिक लेप से ढकी हुई होती है। कलाकार इससे मोम या एक्रिलिक से ढकी हुई सतह पर नुकीली सुई के द्वारा रेखांकन करता है। इसके बाद धातु की प्लेट को नाइट्रिक एसिड या फेरिक क्लोराइड में डुबोया जाता है, जिससे धातु का उघड़ा हुआ भाग अम्ल से प्रक्रिया करके प्लेट पर गहरी रेखाएँ छोड़ देता है। इसके बाद प्लेट के बाकी बचे हुए भाग से मोम या एक्रिलिक के लेप को साफ़ कर दिया जाता है। छापा तैयार करने के लिए इस प्लेट की पूरी सतह पर स्याही लगाई जाती है और फिर उसे पोंछ दिया जाता है। इस प्रकार गहरी रेखाओं में स्याही अवशिष्ट रह जाती है और उभरी सतह साफ़ हो जाती है। इसके बाद प्लेट को उच्च दबाव वाली मशीन पर लगाकर कागज़ की शीट पर दबाया जाता है, इसमें कागज़ को नम कर दिया जाता है जिससे कागज़ मुलायम बना रहे और प्लेट के गहरे भाग में जाकर स्याही को सोख सके और इस प्रकार छापा तैयार हो जाता है। इस विधि को कई बार दोहराकर रेखांकन के कई छापे लेकर अनेक प्रतिलिपियाँ तैयार की जा सकती हैं।

कलम — चित्रकला की शैली।

कला समीक्षक — वह व्यक्ति, जो कला की रचना कला के मूल्यांकन और उसकी समालोचना करने में प्रवीण है। वह अपने विचारों को सामान्यतः समाचार-पत्रों, पत्रिकाओं, वेबसाइट्स एवं पुस्तकों में प्रकाशित करता है।

केरेसक्युरो — चित्रकला में प्रकाश एवं छाया का प्रयोग।

गौश — गौश चित्रण में अपारदर्शी जलरंग से चित्र बनाने की विधि, जिसमें प्राकृतिक रंग को माध्यम बनाते हैं और कभी-कभी अन्य पदार्थों को मिलाकर चित्रण किया जाता है।

घनवाद — घनवाद एक आंदोलन था जो पाब्लो पिकासो और जार्ज ब्राक द्वारा निर्मित 1907 की रचनाओं से संबंधित था। ये दोनों कलाकार अफ्रीकन पारंपरिक मूर्तिकला एवं पॉल सूज़ा की चित्रकला से बहुत अधिक प्रभावित थे। घनवादी कलाकृतियों में वस्तु को विश्लेषण के लिए विघटित किया जाता है, जहाँ कलाकार वस्तु को एक कोण से दिखाने के बजाय कई कोणों से एक ही सतह पर प्रदर्शित करता है।

Chapter 9.indd 146 25 February 2022 05:25:13

© NCERT not to be republished

डिजिटल कलाकार	—	वह व्यक्ति जो डिजिटल तकनीकों, जैसे— कंप्यूटर, ग्राफ़िक्स, डिजिटल फ़ोटोग्राफ़ी और कंप्यूटर का प्रयोग कला सृजन के लिए करता है, जिसमें कलाकृतियों की बहुल उत्पादन की संभावनाएँ निहित हैं।
देशज कला	—	कलाएँ और विचार जब किसी व्यक्ति के अपने अतीत, संस्कृति और पारंपरिक व्यवहार से अभिप्रेरित होते हैं और जिनकी जड़ें उनकी अपने अतीत में होती हैं। इस प्रकार की कला को देशज कला कहते हैं।
देहयष्टि मुखाकृति	—	व्यक्ति के मुखाकृति उसके भाव या उसकी सामान्य प्रतीति। यह किसी वस्तु के लिए भी हो सकता है।
नया माध्यम (न्यू मीडिया)	—	एक कला रूप जो नई मीडिया तकनीकों के साथ कलाकृतियों का निर्माण करता है। जैसे कि डिजिटल कला, कंप्यूटर ग्राफ़िक्स, आभासी कला और अंतरक्रियात्मक कला प्रविधियाँ आदि। यह अपने आप में चित्रकला और मूर्तिकला जैसे पारंपरिक माध्यमों से एकदम विपरीत है।
नीम कलम	—	रेखाचित्र।
पिंटाडोज़	—	स्पेन की एक चित्रण विधा जिसे शरीर पर भी किया जाता है।
प्रकृतिवाद	—	विवरण के विशुद्ध चित्रण के आधार पर निरूपण की एक शैली और सिद्धांत।
प्रदर्शन कला	—	प्रदर्शन कलाओं का जन्म 1970 के दशक में पश्चिम में हुआ था, जब कलाकारों ने स्वयं के जीवंत शरीर को कलाकृति के सृजन में प्रयुक्त किया। उनका प्रदर्शन या तो जीवंत होता है अथवा रिकॉर्डिड जिसके माध्यम से उसे दर्शक के सामने अभिनित किया जाता था।
प्रिंट मेकिंग	—	यह छापे को तैयार करने की एक विधि है, जिसमें छाया चित्रों के पुनः उत्पादन की अपेक्षा मौलिक सृजनात्मक तत्वों का प्रयोग किया जाता है। इसमें एकल सतह के द्वारा छापा तैयार किया जाता है, जिसे *मेट्रिक्स* कहते हैं। प्रत्येक प्रति प्रतिलिपि नहीं होती है, बल्कि वह एक मौलिक रचना की भाँति समझी जाती है, क्योंकि यह किसी दूसरे कार्य का पुनः उत्पादन नहीं है।
पुनर्जागरण कला	—	कला की (चित्रकला, मूर्तिकला, अलंकरण एवं स्थापत्य कला) और साहित्य की एक शैली जिसका उदय यूरोप के इटली में 1400 के लगभग हुआ था। इसके अंतर्गत यूनान के प्राचीन शास्त्रीय कलाकृतियों के प्रभाव से यूरोप में कला और स्थापत्य चौदहवीं और सोलहवीं शताब्दी के मध्य इसका पुनः आगमन हुआ।

© NCERT not to be republished

पुष्पिका पृष्ठ	—	यह किसी पुस्तक के प्रकाशन के विषय में प्रकाशन का स्थान, प्रकाशन का नाम, प्रकाशन की दिनांक आदि का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करता है।
पुस्तक-अनुरागी	—	पुस्तकों को संग्रहित करने और उनसे प्रेम करने वाला व्यक्ति।
फ़ोलियो या पृष्ठ	—	किसी ग्रंथ का हिस्सा या वह एकल मृख पृष्ठ जिस पर संख्या अंकित होती है, उसे फोलियो कहते हैं।
भम्रवाद	—	एक प्रकार की शैली है जिसमें कलात्मक प्रतिरूपण इस प्रकार किया जाता है कि वह यथार्थ से बिलकुल साम्य रखता हुआ दिखाई देता है।
भित्ति चित्र	—	एक कला जिसे सीधे भित्ति, छत या किसी द्वि-आयामी विशाल सतह पर सृजित किया जाता है। यह प्राचीनतम कला का एक रूप है, जिसकी प्राचीनता प्रागैतिहासिक गुफाओं तक है।
मंडी	—	थोक व्यापार के लिए स्थानीय बाज़ार।
मर्मज्ञ या पारखी	—	वह व्यक्ति जो कला, भोजन एवं पेय के विषय में गहन ज्ञान रखता है एवं उसमें गहरी रुचि लेता है।
यथार्थवाद	—	उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में फ्रांस में उद्भूत एक कला आंदोलन।
रहस्यवाद	—	धार्मिक अनुष्ठान, जिनमें वैचारिक, नैतिक, अनुष्ठान, मिथक, जादू, किंवदंती आदि तत्व निहित होते हैं।
लिथोग्राफ़ी	—	यह चित्रकला की एक विधि है, जिसका उदय अठाहरवीं शताब्दी के अंत में हुआ था। लिथोग्राफ़ी में सरंध्र सतह को लिथोग्राफ़ी बनाने के लिए प्रयोग किया जाता, जो सामान्यत: चूने के पत्थर से बनी होती है, चूने के पत्थर पर आकृति को तैलीय माध्यम से रेखांकित करते हैं। फिर उसके ऊपर अम्ल लगाया जाता है, जिससे तैलीय पदार्थ (ग्रीज़) चूने के पत्थर पर स्थानांतरित हो जाए। इसके बाद सरेस या गोंद जैसे पदार्थ जो पानी में घुलनशील होता है, उसे लेप दिया जाता है। यह लेप चूने के पत्थर के रिक्त स्थान पर जहाँ ग्रीज़ नहीं होता है, वहाँ जम जाता है, जिसे बाद में नर्म कागज़ पर दबाव डालकर छाप लिया जाता है।

not to be republished © NCERT

लीनोकट — एक उभार युक्त मुद्रण प्रक्रिया जिसमें लिनोलियम की एक पतली चादर (सतह) का प्रयोग किया जाता है (इसे लकड़ी के ब्लॉक पर भी चढ़ाया जा सकता है)। कोमल माध्यम होने के कारण इसे सरलता से (उत्कीर्ण) उकेरा जा सकता है।

लोकप्रिय कला — कला का वह स्वरूप है जिसे तकनीक के द्वारा किसी कला की पुन: कापी को बहुल संख्या में उत्पादित किया जा सकता और अनेक प्रतिलिपियों में उत्पादित किया जाता है, जो विशाल जनसमूह के लिए सरलता से उपलब्ध होती है। इसका एक उदाहरण कलैंडर आर्ट भी है। प्रसिद्ध कलाकार उच्च कला से संबंधित होते हैं। अपने कार्यों को कला दीर्घा में प्रदर्शित करते हैं, लेकिन उनकी कला की विषयवस्तु दैनिक जीवन से ली गई होती है।

वीडियो कला — वीडियो कला में गतिज आकृतियों का श्रव्य आँकड़ों के बिना या साथ में प्रयोग किया जाता है। इसका उदय 1960 या 1970 के दशक में पश्चिम में हुआ और भारत में यह सन् 2000 के आसपास लोकप्रिय हुई।

शैली — कला, संगीत एवं साहित्य की शैली है।

संग्रहाध्यक्ष (क्यूरेटर) — परंपरागत रूप से एक सांस्कृतिक धरोहर संस्थान (जैसे— पुरा लेखागार, पुस्तकालय, संग्रहालय या उपवन) का रखरखाव (निरीक्षक) करने वालों को कहते हैं। समकालीन कला में संग्रहाध्यक्ष वह व्यक्ति है जो किसी निर्दिष्ट विषयवस्तु पर कलाकृतियों के प्रदर्शन की नीति या प्रविधि को निर्धारित करता है। संग्रहाध्यक्ष से दर्शक को संबोधित करने की अपेक्षा की जाती है। इसलिए प्रदर्शनी के लिए सूचक पत्र, लेख, सूची, सहायक सामग्री तैयार करना उसका दायित्व है।

सामुदायिक कला — किसी समुदाय के स्थित चातुर्दिक संगठित कला को कहते हैं। इसमें उस समुदाय के अंतःक्रिया और संवाद को चारित्रिक रूप से प्रस्तुत किया जाता है। इस शब्द का प्रयोग 1960 के अंतिम दशक में प्रयुक्त हुआ। जब संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा, युनाईटेड किंगडम, आयरलैंड और आस्ट्रेलिया में यह एक आंदोलन के रूप में विकसित हुआ। भारत में नवजोत अल्ताफ और के.पी. सोमन जैसे दो हज़ार कलाकार इसमें शमिल थे। इन लोगों ने स्थानीय समुदाय के साथ सामाजिक विषयवस्तु, जैसे— शोषण, ग्रामीण एवं शहरी भेद और जाति असमानता पर कार्य किया।

© NCERT not to be republished

स्थापन कला — समकालीन कला का एक प्रकार जो परंपरागत माध्यम, जैसे— चित्रकला, मूर्तिकला से भिन्न न होते हुए भी अपनी रचना में अनेक विभिन्न मिश्रित पदार्थों को सम्मिलित करता है और स्थान तथा रूप के प्रत्यय को यथार्थ रूप में रूपांतरित करता है। इसमें दैनिक जीवन में प्रयुक्त होने वाले पदार्थों, जैसे— प्रविधि, वीडियो, इंटरनेट आदि का उपयोग दर्शक के स्नायु पर दृष्टिगत प्रभाव डालने के लिए किया जाता है।

स्फुमातो — एक तकनीक है जिसमें रंग एवं उनकी आभाएँ एक-दूसरे में धीरे-धीरे विलीन हो जाती हैं और आकृति की बाह्य रेखाएँ कोमल हो जाती हैं, जिससे रूपाकार धुँधले से प्रतीत होते हैं।

स्थिति जन्य लघुता — किसी वस्तु का अंकन इस प्रकार किया जाए कि वह अपने वास्तविक दूरी की अपेक्षा कम दूरी या अधिक दूरी के प्रभाव को एक विशेष परिप्रेक्ष्य या परिदृश्य के एक कोण को प्रदर्शित करे।

सौंदर्य शास्त्री — वह व्यक्ति, जो कला और सौंदर्य की सराहना करता है और इसके प्रति संवेदनशील है।

© NCERT not to be republished

ग्रंथ सूची

आर्चर, डब्ल्यू. जी. 1959. *इंडिया एंड मॉडर्न आर्ट*. जॉर्ज ऐलन और अनविन, लंदन.

क्रेवन, जूनियर और सी. रॉय (संपादक). 1990. *रामायण पहाड़ी पेंटिंग*. मार्ग प्रकाशन, बॉम्बे.

क्रैमरिक, स्टेला. 1975. *इंडियन पेंटिंग्स फ्रॉम द पंजाब हिल्स— ए सर्वे एंड हिस्ट्री ऑफ़ पहाड़ी मिनिएचर पेंटिंग्स*. वॉल्यूम I और II. ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नयी दिल्ली.

गुरु, आशा. 2009. *मॉडर्न एंड कंटेम्परारी इंडियन आर्ट*. आशा गुरु, मुंबई.

गोस्वामी, बी. एन. और ई. फिशर. 1992. *पहाड़ी मास्टर्स— कोर्ट पेंटर्स ऑफ़ नॉर्दन इंडियन*. आर्टबस एशिया पब्लिशर सप्लीमेंटम XXXVIII एंड म्यूज़ियम रीटबर्ग ज्यूरिख, स्विट्ज़रलैंड.

चक्रवर्ती, अंजन. 2005. *इंडियन मिनिएचर पेंटिंग*. रोली बुक्स, नयी दिल्ली.

जेब्रोस्की, मार्क. 1983. *दक्कन पेंटिंग*. यूनिवर्सिटी ऑफ़ कैलिफ़ोर्निया प्रेस, बर्कले.

टैगोर, रवींद्रनाथ. 1997. *शांतिनिकेतन— द मेकिंग ऑफ़ कॉन्टेक्चुअल मॉडर्निज़्म*. राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय, नयी दिल्ली.

डालमिया, यशोधर. 2001. *द मेकिंग ऑफ़ मॉडर्न इंडियन आर्ट— द प्रोग्रेसिव*. ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यूयॉर्क.

द्विवेदी, वी. पी. 1980. *बाराहमासा— द सोंग ऑफ़ सीज़न इन लिटरेचर एंड आर्ट*. अगम कला प्रकाशन, दिल्ली

बीच, मिलो क्लीवलैंड. 1992. *मुगल एंड राजपूत पेंटिंग*. कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, कैम्ब्रिज, यू.के.

मागो, प्राण नाथ. 2001. *कंटेम्परारी आर्ट इन इंडिया— ए पर्सपेक्टिव*. सौमित्र मोहन (अनुवादक). 2006. नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया. नयी दिल्ली.

मितर, पार्थ. 1994. *आर्ट एंड नेशनलिज़्म इन कोलोनियल इंडिया (1850–1922)*. कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, इंग्लैंड.

______. 2001. *इंडियन आर्ट*. ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, यू.के.

______. 2007. *द ट्राइम्फ़ ऑफ़ मॉडर्निज़्म— इंडियाज़ आर्टिस्ट्स एंड द अवंत गार्डे (1922–47)*. ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नयी दिल्ली.

not to be republished © NCERT

रंधावा, एम. एस. 1959. *बसोहली पेंटिंग*. प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, नयी दिल्ली.

_____. 1960. *कांगड़ा पेंटिंग ऑफ़ भागवत पुराण*. राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय, नयी दिल्ली.

_____. 1962. *कांगड़ा पेंटिंग ऑन लव*. राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय, नयी दिल्ली.

_____. 1971. *कांगड़ा रागमाला पेंटिंग*. राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय, नयी दिल्ली.

_____. 1972. *कांगड़ा वैली पेंटिंग*. प्रकाशन प्रभाग, भारत सरकार, नयी दिल्ली.

रंधावा, एम. एस. और जॉन केनेथ गालब्रेथ. 1968. *इंडियन पेंटिंग— द सिएन, थीम्स एंड लेजेंड्स*. ऑक्सफ़ोर्ड और आई.बी.एच. प्रकाशक कंपनी, कलकत्ता.

सिन्हा, गायत्री. 2003. *इंडियन आर्ट— एन ओवरव्यू*. रूपा, नयी दिल्ली, इंडिया.

सेन, गीति. 2001. *आर्ट इन इंडिया*. मैक्समुलर भवन, नयी दिल्ली, इंडिया.

© NCERT not to be republished

Chapter 9.indd 152 25 February 2022 05:25:14